छह आवश्यक

प्रियेश सर
93216 46422

आवश्यक यानि श्रावक को अवश्य करने योग्य क्रिया को आवश्यक कहते है।

आत्म शुद्धि के लिए श्रावक - श्राविका को दिनमें छह आवश्यक करने होते है!

१) सामायिक
२) चतुर्विशति स्तव
३) वंदन
४) प्रतिक्रमण
५) कार्योत्सर्ग
६) प्रत्याख्यान

आओ अब यह छह आवश्यक के अभ्यास का हम प्रारंभ करे।

१) सामायिक: पापकी प्रवृती, विचार, एवं क्रिया का त्याग करके ४८ मिनिट धर्मध्यान करना, आत्म चिंतन करना उसे सामायिक कहते है! जीस क्रिया करने से समभाव एवं समता प्राप्त होती है उस क्रिया को सामायिक कहते है ! शुध्ध एवं श्वेत वस्त्र पहनकर कटासना, चरवला और मुहपत्ति लेकर इस सामायिक में हम स्वाध्याय, ध्यान, जाप जैसी कोईभी क्रिया कर शकते है। विधि पूर्वक जाप करने से आत्मा को शांति एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है।

---

२) चतुर्विशति स्तव: चोवीस तीर्थंकरो का नाम - जाप - एवं उनके गुणोका कीर्तन करना उसे हम चतुर्विशति स्तव कहते है! लोगस्स सूत्र के माध्यमसे हम चोबिस जिनेश्वर भगवंत को नमन कर शकते है! जिनालय में जाकर भी परमात्मा का दर्शन - पूजा - आरती करने से भी यह क्रिया हो सकती है।

---

३) वंदन: पूज्य गुरुभगवंत को विधि पूर्वक, विनय से, बहुमानके साथ वंदन करना है। उनको वंदन करने से हमारे आत्मा के कर्मों दुर होते है। ज्ञानावरणीय कर्मो का क्षय होता है, विनय की प्राप्ती होती है।

---

४) प्रतिक्रमण: दिन या रात्री के दरम्यान भूल सेभी कोई पाप हुआ हो तो उनकी निंदा - आलोचना करना, प्रायश्चित करना उसे प्रतिक्रमण कहते है।

यह प्रतिक्रमण के पांच प्रकार है।

राई प्रतिक्रमण देवसिय प्रतिक्रमण पक्खि प्रतिक्रमण

चौमासी प्रतिक्रमण संवत्सरी प्रतिक्रमण

➡ राई प्रतिक्रमण: रात्रीके दरम्यान हुअे पापोकी शुध्धि - प्रायश्चित के लीए सुबहमें जो प्रतिक्रमण करते हैं उसे राई प्रतिक्रमण कहते है।

➡ देवसिअ प्रतिक्रमण: दिन में हुअे पापोके प्रायश्चित के लीए शांम के समय जो प्रतिक्रमण करते हैं उसे देवसिअ प्रतिक्रमण कहते है।

➡ पक्खि प्रतिक्रमण: हर पंदरह दीन के पापोकी शुध्धि करने के लिए चौदस की शांम को जो प्रतिक्रमण करते हैं उसे पक्खि प्रतिक्रमण कहते है।

➡ चौमासी प्रतिक्रमण: हर चार महिने के पापोकी शुध्धि करने के लिए चौमासी चौदस की शांम को करते है। उसे चौमासी प्रतिक्रमण कहते है। चौमासी चौदस सालमें तीन बार आती है।
१) कारतक सुद चौदस २) फागण सुद चौदस ३) अषाढ सुद चौदस

➡ संवत्सरी प्रतिक्रमण: पूरे साल के पापोकी शुध्धि के लिए साल में एक बार संवत्सरी के दिन शांम को जो प्रतिक्रमण करते है उसे संवत्सरी प्रतिक्रमण कहते है। संवत्सरी भादरवा सुद चोथ के दिन आती है।

---

५) कार्योत्सर्ग: देह को स्थिर करके, एकाग्र चितसे मौन पूर्वक ध्यान करना उसे कार्योंत्सर्ग कहते है। कार्योंत्सर्ग का दूसरा नाम काउस्सग्ग भी है।

---

६) प्रत्याख्यान: प्रत्याख्यान यानि त्याग करने के लीए जो नियम लेते है उसे प्रत्याख्यान कहते है। सिर्फ एक देवसीय प्रतिक्रमण करने से छह आवश्यक हो जाते है।

१) करेमिभंते सूत्र के उच्चारण से प्रथम सामायिक आवश्यक होता है।
२) पंचाचार की आठ गाथा के काउस्सग्ग के बाद प्रगट लोगस्स सूत्र बोलने से दूसरा चउविसत्थो आवश्यक हुआ।
३) तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहण के बाद वांदणा सूत्र द्वारा गुरु वंदन करना यह तीसरा वंदन आवश्यक हुआ।
४) वंदीतु सूत्र बोलने से चोथा प्रतिक्रमण आवश्यक हुआ।
५) आयरिय उवज्जाय सूत्र के बाद दो लोगस्स का काउस्सग्ग करनेसे पांचवा कार्योत्सर्ग आवश्यक पूर्ण हुआ।
६) प्रतिक्रमण करनेसे कमसेकम तिविहार का पच्चक्खाण ले ने से छठ्ठा प्रत्याख्यान आवश्यक पूर्ण हुआ।

इस तरह श्रावक और श्राविकाको दिनमें छह आवश्यक करके पुण्य का उत्पार्जन करना चाहिये